रविवार 7 नवंबर, 2021

विषय — आदम और पतित आदमी

स्वर्ण पाठ: इफिसियों 5 : 14

"हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **यशायाह 52: 1, 2, 9, 10**
यशायाह 54: 17
भजन संहिता 17: 15

1 हेसिय्योन, जाग, जाग! अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायमान वस्त्र पहिन ले।
2 अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, हे यरूशलेम, उठ; हे सिय्योन की बन्दी बेटी अपने गले के बन्धन को खोल दे॥
9 हे यरूशलेम के खण्डहरों, एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उसने यरूशलेम को छुड़ा लिया है।
10 यहोवा ने सारी जातियों के साम्हने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है; और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे॥
17 यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है॥
15 परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब मैं जानूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1 : 1, 26-28 (*से 1st ,*)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
28 और परमेश्वर ने उन को आशीष दी।

2. उत्पत्ति 2 : 1, 6-8, 21 (*से* :)

1 योंआकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।
6 तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी
7 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।
8 और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।
21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और वह सो गया।

3. उत्पत्ति 3 : 9, 10

9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है?
10 उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।

4. उत्पत्ति 4 : 1

1 जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती हो कर कैन को जन्म दिया और कहा, मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरूष पाया है।

5. अय्यूब 14 : 1, 6 (*से 1st* ,)

1 मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुख से भरा रहता है।
6 इस कारण उस से अपना मुंह फेर ले।

6. लूका 4: 1 (यीशु) (*से 1st*,), 16-19, 21 (यह)

1 फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ, यरदन से लैटा।
16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।
17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।

18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।
19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।
21 तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।

7. यूहन्ना 3: 1-7

1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरू हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
4 नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
7 अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।

8. इफिसियों 4: 17 (*से 1st* ,), 22 (रखना), 23, 24 (रखना)

17 इसलिये मैं यह कहता हूं।
22 … तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।
23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
24 … नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता, और पवित्रता में सृजा गया है॥

9. 1 कुरिन्थियों 15 : 45, 47-51

45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।
47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
48 जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं।

49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥
50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।

10. रोमियो 13 : 11 (अभी)-14

11 ... इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।
12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।
13 जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।
14 वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाशाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

11. 1 यूहन्ना 3: 2, 3

2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 259 : 6-11

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

2. 282 : 28-31

जो कुछ भी मनुष्य के पाप को दर्शाता है, या भगवान के विपरीत, या भगवान की अनुपस्थिति, एडम का सपना है, जो न तो माइंड है और न ही मनुष्य है, क्योंकि यह पिता की भीख नहीं है।

3. 580 : 21-27

एडम नाम झूठे दंभ का प्रतिनिधित्व करता है कि जीवन शाश्वत नहीं है, लेकिन शुरुआत और अंत है; कि अनंत परिमित में प्रवेश करता है, वह बुद्धि अ-बुद्धि में प्रवेश करती है, और वह आत्मा भौतिक अर्थों में बसता है; उस अमर मन का परिणाम होता है, और नश्वर मन में पदार्थ; एक ईश्वर और निर्माता ने जो बनाया, उसमें प्रवेश किया और फिर पदार्थ की नास्तिकता में गायब हो गया।

4. 307 : 14-16, 26-13

यह त्रुटि स्वयं त्रुटि साबित हुई है। इसका जीवन जीवन नहीं, बल्कि एक अस्तित्व का क्षणिक, गलत अर्थ है, जो मृत्यु में समाप्त होता है।

मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

त्रुटि के भयानक दिन, कालापन और अराजकता के ऊपर, सत्य की आवाज अभी भी कहती है: "एडम, तुम कहाँ हो? चेतना, तुम कहाँ हो? क्या आप इस विश्वास में निवास करते हैं कि मन भौतिक है, और यह बुराई मन है, या आप जीवित विश्वास में कला है कि एक ईश्वर है और उसकी आज्ञा रख सकता है?" जब तक सबक नहीं सीखा जाता है कि भगवान एकमात्र मन शासी आदमी है, तब तक नश्वर विश्वास डर जाएगा क्योंकि यह शुरुआत में था, और मांग से छिप जाएगा, "आप कहां हैं?" यह भयानक मांग, "एडम, तुम कहाँ हो?" सिर, हृदय, पेट, रक्त, नसों, आदि से प्रवेश द्वारा जुड़ा हुआ है: "लो, यहां मैं हूं, शरीर में खुशी और जीवन की तलाश कर रहा हूं, लेकिन केवल एक भ्रम ढूंढ रहा हूं, झूठे दावों का सम्मिश्रण, झूठी खुशी , दर्द, पाप, बीमारी और मृत्यु।"

5. 250 : 6-11 (*से 2nd* .), 22-25

नश्वर अस्तित्व एक सपना है; नश्वर अस्तित्व की कोई वास्तविक इकाई नहीं है, लेकिन सैथ "यह मैं है।" आत्मा वह अहंकार है जो कभी सपने नहीं देखता, लेकिन सभी चीजों को समझता है; जो कभी ग़लती नहीं करता, और जो हमेशा सचेत रहता है; जो कभी विश्वास नहीं करता, लेकिन जानता है; जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है। आध्यात्मिक मनुष्य इस अहंकार की समानता है।

अब मैं पूछता हूं, क्या नींद के सपने की तुलना में नश्वर अस्तित्व के जागने के सपने में कोई और वास्तविकता है? वहाँ नहीं हो सकता है, क्योंकि जो कुछ भी एक नश्वर आदमी प्रतीत होता है वह एक नश्वर सपना है।

6. 305 : 29-30

ये नश्वर सपने मानव मूल के हैं, परमात्मा के नहीं।

7. 546 : 1-17

यह गलत विश्वास कि आत्मा अब मामले में डूबी हुई है, भविष्य के कुछ समय में इससे मुक्ति मिलेगी, — यह विश्वास अकेले नश्वर है। आत्मा, ईश्वर, कभी नहीं उगता है, लेकिन "कल वही है, और आज है, और हमेशा के लिए।" यदि मन, भगवान, त्रुटि पैदा करता है, तो वह त्रुटि दिव्य मन में मौजूद होनी चाहिए, और त्रुटि की यह धारणा देवता की पूर्णता को नष्ट कर देगी।

क्या ईसाई विज्ञान विरोधाभासी है? क्या सृष्टि का ईश्वरीय सिद्धांत गलत है? क्या ईश्वर के पास मन की घोषणा करने का कोई विज्ञान नहीं है, जबकि पदार्थ का संचालन अचूक बुद्धि से होता है? "पृथ्वी से कोहरा छा गया।" यह भौतिक आधार पर अच्छे के विचार से शुरू होने वाली त्रुटि का प्रतिनिधित्व करता है। यह मानता है कि ईश्वर और मनुष्य केवल भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्रकट होते हैं, हालांकि भौतिक इंद्रियां आत्मा या आध्यात्मिक विचार का कोई संज्ञान नहीं ले सकती हैं।

8. 552 : 13-19, 22-24, 28-31

नश्वर जीवन में मानव अनुभव, जो एक अंडे से शुरू होता है, अय्यूब के साथ मेल खाता है, जब वह कहता है, "मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुख से भरा रहता है।" नश्वर को भौतिक जीवन की इस धारणा से समग्र रूप से उभरना चाहिए। उन्हें ईसाई विज्ञान के साथ अपने गोले खोलने चाहिए, और बाहर और ऊपर की ओर देखना चाहिए।

भौतिक स्रोत से दु:ख, पाप और मृत्यु के लिए कोई उपाय नहीं बहता है, मुक्ति शक्ति के लिए, वे जो बुराई करते हैं, वह अंडे में नहीं है और न ही धूल में है। ... इस प्रकार यह सीखा जाता है कि पदार्थ नश्वर मन की अभिव्यक्ति है, और जब पूर्ण और शाश्वत मन को समझा जाता है तो वह पदार्थ हमेशा अपने दावों को छोड़ देता है।

9. 303 : 16-20

दिव्य विज्ञान इस भ्रम की जड़ पर कुल्हाड़ी मारता है कि जीवन, या मन, भौतिक शरीर में है या उससे बनता है, और विज्ञान अंततः इस भ्रम को सभी त्रुटि के आत्म-विनाश और विज्ञान के जीवन की समझदार समझ के माध्यम से नष्ट कर देगा।

10. 557 : 16-21

जब नश्वर मन की धुंध वाष्पित हो जाएगी, तब श्राप दूर हो जाएगा जो स्त्री से कहता है, "दुख में, तू सन्तान उत्पन्न करेगा।" ईश्वरीय विज्ञान सत्य के प्रकाश के साथ त्रुटि के बादलों को वापस रोल करता है, और मनुष्य पर पर्दा उठाता है जैसे कि कभी पैदा नहीं हुआ और कभी न मरने वाला, लेकिन अपने निर्माता के साथ सह-अस्तित्व के रूप में।

11. 223 : 2-6

पाल ने कहा, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।" जल्दी या बाद में हमें पता चलेगा कि मनुष्य की परिमित क्षमता के भ्रूण को इस भ्रम से मजबूर किया जाता है कि वह आत्मा के बजाय आत्मा के स्थान पर शरीर में रहता है।

12. 230 : 4 (यह)-10

... तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को ठीक करता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत और प्रेम के माध्यम से आता है, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

13. 171 : 4-8 (*से 4th* ,)

भौतिकता के आध्यात्मिक विपरीत के माध्यम से, यहां तक कि मसीह, सत्य के माध्यम से भी, मनुष्य दिव्य विज्ञान की कुंजी के साथ स्वर्ग के द्वार को फिर से खोल देगा, जिसके बारे में मनुष्यों का मानना है कि वे बंद थे, और वह खुद को बेदाग, ईमानदार, शुद्ध और स्वतंत्र पाएंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।